

पाक्र राजसत्ता में अंदरूनी जंग

(प्रभात कुमार राँय)

पाकिस्तान की राजसत्ता के तीन प्रमुख स्तंभों कार्यपालिका, न्यायपालिका और फ़ौज के मध्य इन दिनों सत्ता संघर्ष का प्रबल दौर जारी है। ऐतिहासिक तौर पर पाकिस्तान की फ़ौज भी राजसत्ता का सबसे अहम किरदार रही है। नागरिक राजसत्ता काल में भी पाक्र फ़ौज एक स्वयंभू राजसत्ता के तौर पर बाकायदा बरकरार रही है। सर्वोच्च न्यायपालिका अर्थात् पाक्र सुप्रीम कोर्ट ने 2009 में पाक्र हुकूमत द्वारा नेशनल रिकंसिलिएशन आर्डिनेंस के तहत आठ हजार वांटेड अपराधियों को माफीनामा प्रदान करने के हुकम को निरस्त करने का फैसला किया। पाक्र सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले ने पाकिस्तान में हड़कंप मचा दिया। वांटेड अपराधियों की लिस्ट में हुकूमत में विराजमान पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के लीडर पाक्र राष्ट्रपति आसिफ़अली जरदारी और प्रधानमंत्री यूसूफ़ रजा गिलानी सहित अनेक बड़े लीडरों के नाम शामिल हैं। इन लीडरान पर बाकायदा मुकदमा चलेगा तो सभी को अपने ओहदे से इस्तीफा पेश करना होगा।

क्रयास लगाया जाता रहा है कि पाकिस्तान में एक बार पुनः नागरिक राजसत्ता (सिविलियन सरकार) का तख्ता पलट कर पाकिस्तानी फ़ौज अतिशीघ्र हुकूमत पर कब्जा जमा लेगी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री यूसूफ़ रजा गिलानी द्वारा डिफेंस सेक्रेटरी लेफ्टिनेन्ट जनरल ख़ालिद नईम लोधी की बर्खास्तगी के पश्चात फ़ौज और हुकूमत के मध्य मेमोगेट काँड के दौर से चली आ रही क़शीदगी और तनातनी में यकायक इतनी अधिक बढ़ गई कि ऐसा प्रतीत हेने लगा कि यथाशीघ्र ही पाक्र फ़ौज़ अपने पुराने इतिहास को फिर से दोहरा देगी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री यूसूफ़ रजा गिलानी ने प्रथम बार खुलकर बयान दिया कि पाकिस्तानी राजसत्ता के अंदर एक और स्वयंभू राजसत्ता को जोकि फ़ौज़ और आईएसआई के तौर पर विद्यमान रही है, उसे कदाचित और अधिक बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। फ़ौज और आईएसआई को

पूर्णतः पाकिस्तानी राजसत्ता के तहत ही काम करना होगा। पाक प्रधानमंत्री के इस सनसनीखेज और उत्तेजक बयान के बाद ऐसी अपुष्ट खबरें आई कि हुकूमत डिफेंस सेक्रेटरी लेफ्टिनेन्ट जनरल खालिद नईम लोधी की तर्ज पर पाक फौज के कमांडर इन चीफ जनरल परवेज़ क्रियानी और आईएसआई चीफ लेफ्टिनेन्ट जनरल शुज़ा पाशा को भी बर्खास्त करने जा रही है। इस अफवाह के पश्चात तो समूचे पाकिस्तान में हड़कंप मच गया। पाक फौज के कमांडर इन चीफ जनरल क्रियानी ने अपने सभी कोर कमांडरों की तत्काल एक आपात बैठक बुलाई फिर तो ये क्रयास और भी तेज हो गए कि किसी भी माकूल वक्त पर पाकिस्तानी फौज हुकूमत पर अपना कब्जा जमा लेगी। अब खबर आई है कि हुकूमत ने सुप्रीम कोर्ट में हलफिया कहा है कि जनरल परवेज़ क्रियानी और लेफ्टिनेन्ट जनरल शुज़ा पाशा पर कोई कार्यवाही नहीं करेगी।

सन् 2009 से आत्म-निष्कासन में लंदन में प्रवासरत पाकिस्तान के पूर्व फौजी तानाशाह जनरल मुशर्रफ के पाकिस्तान वापस लौट आने के ऐलान ने भी पाक फौज के तख्ता पटल के सरगर्म क्रयास को और अधिक बल प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि अपने तानाशाह काल में जनरल मुशर्रफ ने जनरल क्रियानी को पाक फौज के कमांडर इन चीफ के तौर पर नियुक्त किया था और वह आज भी जनरल मुशर्रफ के वफादार समझे जाते हैं। ऐसा अनुमान है कि जनरल क्रियानी के आश्वस्त करने बाद ही कि उन पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जाएगा, जनरल मुशर्रफ ने वस्तुतः पाकिस्तान लौटने का निर्णय किया, जिसे अब हालात को देखते हुए मुशर्रफ ने मुलतवी कर दिया। पाकिस्तान राष्ट्रपति आसिफ़ अली ज़रदारी के यकायक दुबई प्रस्थान कर जाने के कारणवश भी फौज के तख्ता पलट क्रयास को जोरदार हवा मिली। हांलाकि अगले रोज ही राष्ट्रपति ज़रदारी पाकिस्तान लौट आए।

दरअसल लोकतांत्रिक चुनाव के माध्यम से तशक़ील हुई पाकिस्तान की नागरिक हुकूमत और फौज के मध्य क़शीदगी और तनाव का तब आगाज हुआ, जबकि अमेरिका में तैनात तत्कालीन पाक-एम्बेसेडर हक्कानी की पहल पर सिविलियन

सरकार को संभावित फ़ौजी तख़्ता पलट से बचाने की अमेरिकी सरकार से गुज़ारिश की गई। इस तथ्य का खुलासा अमेरिका में मुक़ीम रहे एक अति धनाढ्य पाक बिजनेसमैन मंज़ूर एजाज़ ने किया। मंज़ूर एजाज़ ने फरमाया कि एम्बेसेडर हक्कानी द्वारा पाक सरकार की इस गुज़ारिश को अमेरिकन फ़ौज़ के तत्कालीन कमांडर इन चीफ़ माइक मुलेन तक पहुंचाने का काम स्वयं उनके द्वारा अंजाम दिया गया। इस सनसनीखेज़ खुलासे के पश्चात तो एम्बेसेडर हक्कानी को अपने प्रतिष्ठित पद से त्यागपत्र पेश करना पड़ा। यह समस्त घटनाक्रम अंतर्राष्ट्रीय इतिहास में मेमोगेट के नाम से दर्ज हो गया। मुस्लीम नेता और पूर्व पाक प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ ने मेमोगेट प्रकरण को देशद्रोह निरूपित करते हुए, एक याचिका पाक सुप्रीमकोर्ट में दायर की गई, जिस पर सुनवाई जारी है।

पाकिस्तान की राजसत्ता का वास्तविक चरित्र दरअसल उसकी तशक़ील के वक्त से तक़रीबन परिवर्तित नहीं हुआ। बड़े मुस्लिम सामंतों ने मुस्लिम लीग के परचम तले पाकिस्तान का निर्माण ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की शह और इमदाद के बलबूते किया। पाक राजसत्ता का असल सामंती चरित्र आज भी बाकायदा बरकरार है। पहले पाक राजसत्ता ब्रिटिश हुकूमत के बलबूते पर बनी और चली और अब विश्व रंगमंच पर ब्रिटिश हुकूमत का स्थान ले चुकी, अमेरिकन हुकूमत के बलबूते और हिमायत पर बनती बिगड़ती है। सशक्त अमेरिकन पुश्तपनाही के दम पर ही पाक फ़ौज ने नागरिक सत्ता का प्रत्येक बार तख़्ता पलट किया। पाक फ़ौज के मूल सामंती चरित्र के साथ लोकतांत्रिक व्यवस्था की पटरी ठीक तरह से बैठ ही नहीं पाती। जनरल सिंकदर मिर्जा ने पाक राजसत्ता में प्रथम फ़ौजी तख़्ता पलट किया, जिसकी कमान बाद के काल में जनरल अय्यूब खान द्वारा संभाली गई। जनाब जुल्फीकारअली भुट्टो की क़यादत में द्वितीय लोकतांत्रिक सत्ता काल आया, जिसकी उम्र केवल आठ साल रही और कथित समाजवादी जुल्फीकारअली भुट्टो की सत्ता का तख़्ता पलट 1979 में जनरल जिया उल हक़ ने किया। जनरल जिया की 1989 में हलाक़त के बाद फिर से लोकतांत्रिक सत्ता काल आया, जिसकी क़यादत क्रमशः बेनजीर भुट्टो और नवाज़ शरीफ़ ने की। आखिरकार फिर हुकूमत की बाजी फ़ौजी

जनरल मुशर्रफ के हाथ रही। मुशर्रफ हुकूमत के खात्मे के बाद अभी तक विगत चार वर्षों से पाकिस्तान में पीपुल्स पार्टी की लोकतांत्रिक हुकूमत कायम है, जिस पर फिर से फौज़ी तख्ता पलट का पिशाच मंडरा रहा है।

इस वक्त विश्वभर में लोकतंत्र की अनुपम बयार बह रही है। अरब राष्ट्र ट्यूनिशिया से उठा जनतांत्रिक तूफान अब तक अनेक अरब राष्ट्रों की तानाशाह हुकूमतों का खात्मा कर चुका है। ऐसे विकट तूफानी जनतांत्रिक दौर में जनतंत्र का सरबराह बना अमेरिका तो पाकिस्तान में फौजी तानाशाह हुकूमत की स्थापना की हिमायत और पुश्तपनाही कदाचित नहीं कर सकेगा। पाक फौज़ जोकि अमेरिकन इमदाद के बलबूते ही फलती फूलती और ताकतवर रही बनी है, अपने आक्रा अमेरिका को नाराज करके कोई कदम कदापि उठा नहीं सकती। चीन की कम्युनिस्ट हुकूमत के समर्थन के भरोसे कभी भी पाकिस्तानी फौज़ नागरिक राजसत्ता का तख्ता पलट नहीं कर सकती। हांलाकि अपने चीन दौरे के पश्चात जनरल क्रियानी के तेवर प्रधानमंत्री गिलानी के प्रति कुछ अधिक तीखे प्रतीत हुए। फिर भी ऐतिहासिक तौर पर चीन वस्तुतः अमेरिका के मुकाबले पाकिस्तान की अंदरूनी राजनीति को प्रभावित करने में सदैव कमजोर शक्ति रहा है। पाक के सामंती चरित्र के फौजी शासक जोकि अभी तक औद्योगिक प्रगति राह पकड़ कर विश्व पूँजीवाद की ओर जाने से भी डरते हैं, आखिर क्यों और किस तरह से अमेरिकन हुकूमत को नाराज़ करके कम्युनिस्ट चीन के शिकंजे में जाना चाहेंगे। समूचे विश्व के वस्तुगत हालात को मद्देनजर रखते हुए एक नतीजा निकलता है कि पाक फौज़ द्वारा नागरिक सत्ता के तख्ता पलट की निकट भविष्य में संभावना कदाचित नहीं है।

(पूर्व प्रशासनिक अधिकारी)